2

दोहे

पिछले पाठ में आपने एक कहानी पढ़ी। इस पाठ में हम दोहे को पढ़ेंगे जो कि हिंदी का एक प्रमुख छंद है। कबीर, रहीम, वृंद आदि मध्यकालीन हिंदी कवियों ने अपनी कविताओं में ज्यादातर इसी छंद का प्रयोग किया है। प्रायः दोहों के विषय भक्ति, शृंगार और नीति के रहे हैं। इस पाठ में हम कबीर, रहीम और वृंद के नीति या उपदेशपरक दोहों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- व्यक्तित्व-निर्माण में निंदा और आलोचना की भूमिका का उल्लेख कर सकेंगे;
- बड़ों द्वारा किए गए कठोर व्यवहार के सकारात्मक पक्ष को स्पष्ट कर सकेंगे;
- अनावश्यक धन से उत्पन्न विकृतियों को समझकर धन की उपयोगिता पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अवसरानुकूल व्यवहार के औचित्य का वर्णन कर सकेंगे;
- जीवन में अभ्यास का महत्त्व रेखांकित कर सकेंगे;
- दोहा छंद को पहचान कर उनके प्रयोग के बारे में व्याख्या कर सकेंगे;
- दोहों के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समान भाव के दोहों की तुलना कर सकेंगे और उनका अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे।

2.1 मूल पाठ

आइए, एक बार इन दोहों को पढ़ लें :

दोहे

ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होइ ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदै सोइ ।। 1।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करत सुभाय ।। 2।।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।। 3।।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम ।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम ।। 4।।

—कबीर

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए, हमको पूछत कौन।। 5।।

खैर, खून, खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं, जानत सकल जहान।। 6।।

—रहीम

करत-करत अभ्यास तें, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात तें, सिल पर परत निसान।। 7।।

नैना देत बताय सब, हिय को हेत-अहेत।
जैसे निरमल आरसी, भली-बुरी कहि देत।। 8।।

—वृंद

टिप्पणी

शब्दार्थ

जनमिया = जन्मा
सुबरन = स्वर्ण, सोना
कलस = कलश, घड़ा
सुरा = शराब
निंदै = निंदा करता है
सोई = उसे, उसकी
नियरे = पास
छवाय = बनाकर
सुभाय = स्वभाव
सिष = शिष्य
कुंभ = घड़ा
काढ़ै = निकालता है
खोट = दोष, कमी
सयानो = समझदार
पावस = वर्षा ऋतु
कोइल = कोयल
मौन = चुप्पी
दादुर = मेंढक
बक्ता = वक्ता, बोलने वाला
खैर = कत्था। खैर और ख़ैर दो अलग-अलग मूल के शब्द हैं। ''खैर'' (बिना नुक्ता लगाए) मूलतः हिंदी का शब्द है, जिसका अर्थ होता है— 'कत्था' (इसे पान में डालकर खाया जाता है। दूसरा शब्द है ख़ैर (नुक्ता सहित), जो अरबी मूल का शब्द है, जिसका अर्थ है— कुशलता। यहाँ रहीम ने कत्थे के अर्थ में 'खैर' का प्रयोग किया है।
मदपान = मदिरापान (नशा)
सकल = सारा
जहान = संसार
जड़मति = मूर्ख
सुजान = चतुर, समझदार
रसरी = रस्सी
सिल = पत्थर
निसान = निशान, चिह्न
हिय = हृदय, मन
हेत-अहेत = हित-अहित, भलाई-बुराई
निरमल = निर्मल, स्वच्छ
आरसी = आईना, दर्पण

टिप्पणी

2.2 आइए समझें

2.2.1 अंश-1

दोहा-1

आइए, कबीरदास का प्रथम दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

ऊँचे कुल का जनमिया,
करनी ऊँच न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा,
साधू निंदै सोइ।।

चित्र 2.1

कबीर कहते हैं कि अगर अच्छे घर-ख़ानदान में पैदा हुए व्यक्ति का व्यवहार और उसके कर्म अच्छे न हों, तो वह उसी प्रकार निंदा का पात्र होता है, जिस प्रकार शराब भरे सोने के कलश को सज्जन निंदनीय समझते हैं। कहने का मतलब है कि जिस प्रकार सोने का घड़ा भी अपने अंदर शराब जैसी वस्तु भरी होने के कारण अपनी महत्ता खो देता है और बुराई का पात्र बनता है, उसी प्रकार अच्छे कुल या परिवार में जन्म लेने वाले व्यक्ति का आचरण अगर अच्छा न हो, तो वह भी लोगों की तारीफ़ का नहीं, बल्कि निंदा का पात्र बन जाता है।

इस दोहे में कवि ने बताया है कि आदमी की पहचान उसके घर-ख़ानदान से, उसके वर्ण और जाति से, उसके धनवान और निर्धन होने से नहीं; बल्कि उसके आचरण, उसके व्यवहार और चाल-चलन से होती है। अच्छे कर्म करने वाले व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है और बुरे कर्म करने वाले की निंदा होती है।

टिप्पणी

1. मनुष्य के बारे में अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए कबीर ने इस दोहे में सोने के कलश का उदाहरण दिया है। जब किसी बात को समझाने के लिए जीवन-जगत् के किसी दूसरे व्यवहार को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तो उसे दृष्टांत कहते हैं। अतः यहाँ **दृष्टांत अलंकार** का प्रयोग है।

टिप्पणी

2. मनुष्य का तन सोने के घड़े जैसा है। ऐसा तन पाकर उसमें अच्छाई का विकास करने की जगह उसे बुराइयों का घर बनाना किसी भी तरह प्रशंसा की बात नहीं हो सकती।

3. बहुत आसान तरीके से अच्छे कर्म करने की बात कही गई है।

दोहा-2

आइए दूसरा दोहा फिर से पढ़ लें।

निंदक नियरे राखिए,
आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना,
निरमल करत सुभाय।।

आपने अनुभव किया होगा कि अधिकतर लोगों को अपनी प्रशंसा बहुत अच्छी लगती है, जबकि अपनी आलोचना करने वालों को कोई पसंद नहीं करता। यों भी समाज में ऐसे लोग तो अक्सर मिल जाते हैं, जो मुँह पर तारीफ़ करते हैं और पीठ-पीछे निंदा। मगर, ऐसे लोग बड़ी मुश्किल से मिलते हैं, जो सामने ही हमारी आलोचना करें, हमारी कमियाँ बताएँ। प्रायः हम ऐसे लोगों से मिलने से कतराते हैं, उन्हें पसंद नहीं करते।

चित्र 2.2

कबीर ने ऐसे आलोचकों से बचने की नहीं, बल्कि उनको अपने नज़दीक रखने की आवश्यकता पर बल दिया है। वे कहते हैं कि निंदक को तो आँगन में कुटी बनवाकर अपने पास ही रखना चाहिए, निंदा से हमें अपनी कमियों का पता चलता है और हम उन्हें दूर कर लेते हैं। इस प्रकार, साबुन और पानी के बिना ही वे हमारे स्वभाव को निर्मल बना देते हैं।

अब ज़रा सोचिए कि आदमी अपना शरीर तो साबुन-पानी से साफ़ कर लेता है, पर वह अपने व्यवहार, आदतों और स्वभाव की कमियों और बुराइयों से कैसे छुटकारा पाए? आदमी को अपनी कमियाँ, कमज़ोरियाँ, बुराइयाँ ख़ुद तो दिखती नहीं। दूसरे लोग आम तौर पर उसके सामने इनका उल्लेख नहीं करते। केवल आलोचक ही हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि हममें कहाँ और क्या कमी है? तो फिर उनसे कतराएँ क्यों? क्यों न उनकी सुनें, जिससे हमें अपनी कमियों का पता चले और हम उनको दूर करने का प्रयास करें और अपने स्वभाव को निर्मल बनाएँ। इस दोहे में कबीर हमसे यही कहना चाहते हैं।

टिप्पणी

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में निंदक से दूर रहने के प्रचलित रिवाज़ के विपरीत उससे लाभ उठाने का संदेश दिया गया है।
2. कविता में जहाँ पास-पास आने वाले शब्दों में एक ही वर्ण का बार-बार दुहराव (आवृत्ति) हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। यहाँ 'निंदक नियरे' में 'न' वर्ण की आवृत्ति से **अनुप्रास अलंकार** है।
3. प्रस्तुत दोहे में 'आत्म-बोध' और 'विश्लेषणात्मक चिंतन' जैसे जीवन-कौशलों को उभारा गया है।

क्रियाकलाप-2.1

कोई परिचित या अपरिचित व्यक्ति जब आपकी किसी गलती की ओर इशारा करता है, तो आपको कैसा लगता है? कबीर के इस दोहे को पढ़ें और इस संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया लिखें:

.....

.....

.....

.....

.....

दोहा-3

आइए, तीसरा दोहा एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है,
गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै,
बाहर बाहै चोट।।

हमेशा से एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को अपना अनुभव और ज्ञान सौंपती आ रही है। ज्ञान देने वाले व्यक्ति को गुरु कहते हैं अर्थात् गुरु वह होता है, जो ज्ञान दे, ज्ञान को धारण करने लायक बनाए, जो चरित्र-निर्माण करे और बेहतर मनुष्य बनाए।

कबीर ने अपने इस दोहे में गुरु-शिष्य संबंध और गुरु के कार्य के विषय में बताया है। जिस प्रकार कुम्हार घड़ा बनाता है, उसी प्रकार गुरु शिष्य को तैयार करता है।

आपने कुम्हार को घड़ा बनाते देखा है? अगर नहीं, तो चित्र 2.3 को ध्यानपूर्वक देखिए। वह चाक पर गीली मिट्टी रखता है और चाक को घुमाता है। बीच-बीच में हाथ से मिट्टी के उस लोंदे को आकृति देता जाता है। जैसे-जैसे यह आकृति स्पष्ट होती है और उसका आकार बढ़ता है, वैसे-वैसे उसे सँभालने के लिए विशेष प्रयत्न करना होता है, वरना आकृति बिगड़ सकती है। घड़ा बना चुकने पर जब वह उसे चाक से उतारता है, तो घुमा-घुमा कर उसकी कमियों को परखता है। अक्सर कहीं-कहीं मिट्टी के बीच हवा आ जाने से छेद रह जाते हैं। वह उन्हें देखता है और ढूँढ-ढूँढ कर निकालता है, उन्हें दूर करता है। वह भीतर की तरफ़ से हाथ का सहारा देता जाता है, ताकि घड़ा

टिप्पणी

टूट न जाए और बाहर की तरफ़ से थपकी से चोट करता जाता है। तब कहीं जाकर एक सुंदर और दोष-रहित घड़ा तैयार होता है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर कहते हैं कि गुरु कुम्हार है और उसकी रचना यानी उसका शिष्य घड़ा है। शिष्य को तैयार करते हुए गुरु उसकी ख़ामियों, उसके दोषों को दूर करता जाता है। 'काढ़ना' का अर्थ निकालना होता है (जैसे–दूध काढ़ना)। ऐसा करते हुए वह अपने शिष्य को भीतर-भीतर तो सहारा देता है यानी आंतरिक रूप से स्नेह देता है, पर बाहर से ठोकता चलता है। कहने का अर्थ है कि गुरु का व्यवहार ऊपर से तो कठोर लगता है, पर आंतरिक रूप से बड़ा स्नेहपूर्ण होता है। वह अपने शिष्य की तमाम कमियों और कमज़ोरियों को अपने कठोर नियंत्रण से दूर कर देता है और उसे ज्ञान देने के साथ-साथ आत्मिक और चारित्रिक रूप से भी दृढ़ बना देता है।

चित्र 2.3

'गढ़ना' शब्द का अर्थ सिर्फ़ बनाना नहीं होता, बल्कि पूरी आत्मीयता से दोषरहित कृति तैयार करना होता है–जैसे अच्छा मूर्तिकार मूर्ति गढ़ता है, तो उसे सजीव और जीवंत बना देता है; सुनार आभूषण में कलात्मक सौंदर्य उभारता है। इसीलिए यहाँ कवि ने गुरु द्वारा शिष्य को गढ़ने की बात कही है। अच्छा गुरु शिष्य को कोरा ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उसे समाज और दुनिया के लिए एक बेहतर इंसान के रूप में तैयार करता है। यहाँ ज्ञानवान बनाने के साथ-साथ चरित्रवान बनाने का भी संकेत है। जैसे घड़े में अगर नन्हे-नन्हे छेद रह जाएँ, तो उससे पानी रिसेगा और उसकी उपयोगिता कम या समाप्त हो जाएगी, वैसे ही ज्ञान अगर आचरण या व्यवहार पर खरा नहीं उतरेगा, तो उसकी भी सामाजिक उपयोगिता नहीं रहेगी।

टिप्पणी

1. कबीर ने इस दोहे में कुम्हार और घड़े के माध्यम से गुरु और शिष्य के संबंध को तो आसानी से समझाया ही है, ज्ञान की सामाजिक उपयोगिता यानी व्यवहार की कसौटी पर ज्ञान के खरे उतरने पर भी बल दिया है।

2. कबीर ने अपने काव्य में गुरु को अत्यधिक महत्त्व दिया है। गुरु की महिमा को व्यक्त करने वाला यह दोहा आपने पढ़ा या सुना होगा, जिसमें उन्होंने गुरु को ईश्वर से भी अधिक महत्त्व दिया है–

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

टिप्पणी

दोहा-4

कबीर का चौथा दोहा फिर पढ़ लेते हैं।

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोऊ हाथ उलीचिए, यही सयानो काम।।

आप अक्सर सोचते होंगे कि अगर हमारे पास अपार दौलत होती, तो कितना मज़ा होता! क्या कभी यह भी सोचा है कि धन हमेशा ही फ़ायदेमंद नहीं होता। वह अपने साथ बहुत सी बुराइयाँ भी लाता है। अगर किसी के पास बहुत-सा पैसा हो, तो वह क्या करेगा? ज़ाहिर है कि वह पहले अपनी ज़रूरतों को पूरा करेगा, फिर अपने लिए सुविधाएँ जुटाएगा, फिर भोग-विलास और फिर बुरे शौकों (व्यसनों) को पूरा करने लगेगा। यानी, धन एक हद तक तो ज़रूरतों को पूरा करता है, लेकिन ज़्यादा पैसा होने पर आदमी सुख-सुविधा में फँसता है, केवल अपना फ़ायदा देखता है और विलासी बन जाता है। कबीर ने धन की अधिकता होने पर उससे छुटकारा पाने की या उसे दान कर देने की बात कही है। उन्होंने नाव में पानी भरने से इसकी तुलना की है। उनके अनुसार जैसे नाव में पानी भरने पर यदि पानी को बाहर न निकाला जाए, तो नाव का डूबना तय है, वैसे ही धन की अधिकता होने पर यदि दान करके उसे ख़र्च न किया जाए, तो व्यक्ति का पतन भी निश्चित है।

इस दोहे में कबीर कहते हैं कि यदि नाव में पानी भरने लगे और घर में पैसे की अधिकता होने लगे, तो समझदारी इसी में है कि दोनों हाथों से उलीचना शुरू कर दीजिए। नाव में पानी बढ़ने पर उसका डूबना निश्चित है, इसलिए जैसे ही पानी भरने लगता है, नाविक उसे दोनों हथेलियाँ मिलाकर (अंजुरी बनाकर) बाहर फेंकने लगता है। इसी तरह, यदि घर के अंदर आवश्यकता से अधिक पैसा बढ़ने लगे, तो समझदार व्यक्ति को अंजुरी भर-भर कर उसे बाहर कर देना चाहिए अर्थात् दान कर देना चाहिए, क्योंकि धन की अधिकता अपने साथ ऐसी विकृतियाँ लेकर आती है, जिससे घर का विनाश होना निश्चित होता है।

टिप्पणी

1. 'नाव में जल' और 'घर में धन' जैसी दो भिन्न स्थितियों में न केवल समानता स्थापित की गई है, बल्कि इससे नीतिगत उपदेश को सरल और बोधगम्य बना दिया गया है।

2. आप जानते हैं कि नाव में वैसे तो पानी आता नहीं, पानी तभी आता है, जब उसमें छेद हो या टूट आ जाए। इसी प्रकार, घर में गलत तरीके से कमाया गया धन आ जाए, तो उसे भी घर से निकाल देना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया,

चित्र 2.4

तो जो हाल पानी भरने से नाव का होगा, वही हाल गलत तरीके से आनेवाले पैसे से घर का भी होगा अर्थात् दोनों का डूबना, नष्ट होना तय है।

3. 'सयाना' का वास्तविक अर्थ है—वयस्क, बालिग, परिपक्व, समझदार आदि। यहाँ 'सयानो काम' का अर्थ है— समझदारी का काम।

4. कबीर ने धन की आवश्यकता को नकारा नहीं है, उसकी अधिकता को हानिकारक बताया है। धन मनुष्य के पास कितना हो, इस विषय में उनका यह दोहा देखिए—

साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

पाठगत प्रश्न-2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. कबीर के अनुसार ऊँचे कुल में जन्म लेने पर भी आदमी निंदा का पात्र होता है, जब वह—

(क) अच्छे कर्म नहीं करता ☐ (ख) सुरापान करता है ☐

(ग) साधुओं का सत्संग करता है ☐

(घ) धन को इकट्ठा नहीं होने देता ☐

2. अच्छा गुरु—

(क) स्वभाव को निर्मल बनाता है ☐ (ख) घर में धन बढ़वाता है ☐

(ग) रास्ते में फूल बोता है ☐ (घ) कमियों को दूर करता है ☐

3. कबीर ने दोहे में जल की तुलना किससे की है?

(क) नाव से ☐ (ख) धन से ☐

(ग) हाथों से ☐ (घ) सयानेपन से ☐

2.2.2 अंश-2

दोहा-5

आइए, पाँचवें दोहे को ठीक से समझने के लिए उसे एक बार फिर से पढ़ लेते हैं।

यह दोहा रहीम का लिखा हुआ है। आपको पता होगा कि एक वर्ष में छह ऋतुएँ होती

टिप्पणी

हैं। इनके नाम हैं— ग्रीष्म (गरमी), पावस (वर्षा), शरद (हल्की सरदी) शिशिर, (तेज़ सरदी) हेमंत (पतझड़) और वसंत।

आपने वसंत में कोयल की कूक और वर्षा में मेंढक की टर्र-टर्र की आवाज़ें तो सुनी ही होंगी। ज़ाहिर है कि कोयल की कूक सभी को भाती है। उसके स्वर में मिठास होती है और गायन में लय। आपने प्रायः एक बार में एक ही कोयल का स्वर सुना होगा, सामूहिक स्वर नहीं। दूसरी तरफ़, मेंढक एक साथ टर्राते हैं, उनका टर्राना सुनने में बड़ा ही अरुचिकर लगता है। उस शोर में और सभी आवाज़ें दब-सी जाती हैं। इसी आधार पर कवि ने कोयल को ज्ञानवान व्यक्ति के प्रतीक के रूप में और मेंढक को शोर-शराबा करके ध्यान खींचने वालों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है।

पावस देखि रहीम मन,
कोइल साधै मौन।
अब दादुर बक्ता भए,
हमको पूछत कौन।।

आइए, अब इस दोहे का अर्थ-सौंदर्य देखें।

रहीम कहते हैं कि पावस अर्थात् वर्षा ऋतु के आने पर कोयल अपने मन में यह विचार करके मौन साध लेती है कि अब तो मेंढक वक्ता हो गए हैं (जानकारी न रखते हुए भी बढ़-चढ़कर बात करने लगे हैं), अब हमें कौन पूछेगा अर्थात् अब हमारी कद्र कौन करेगा?

तात्पर्य यह है कि जब कम जानकार या अज्ञानी लोग बढ़-चढ़ कर बातें करते हुए महत्त्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं; क्योंकि उनका स्वर इस शोर-शराबे में दबकर रह जाता है और न सुने जाने के कारण उनकी बात का उचित प्रभाव नहीं पड़ता।

अब सवाल उठता है कि क्या रहीम यह कहना चाहते हैं कि मूर्खों के बढ़-चढ़ कर बोलने पर विद्वान को ज्ञानपूर्ण बातें नहीं करनी चाहिए? नहीं, ऐसा नहीं है। गौर करें, पावस देखकर कोयल के मौन साधने की बात कही गई है, हमेशा के लिए नहीं। जब ऋतु बदलेगी, तो मेंढकों का टर्राना बंद हो जाएगा, फिर वसंत ऋतु आएगी और कोयल फिर पंचम स्वर में संदेश देगी। मतलब साफ़ है— विद्वान का मौन सिर्फ़ उतने समय के लिए होता है, जितने समय तक शोर-शराबा हो, बढ़-चढ़कर मूर्खतापूर्ण बातें हों। अनुकूल अवसर मिलते ही विद्वान को फिर ज्ञान और मानव–कल्याण की बातें कहनी चाहिए। इससे यह भी पता लगता है कि विद्वान अनुकूल अवसर पर ही अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करता है।

टिप्पणी

1. इस दोहे में सामान्य रूप में कोयल और मेंढक का ही ज़िक्र है, पर उसके द्वारा विद्वान और मूर्ख वाला अर्थ व्यक्त होता है। जहाँ साधारण तौर पर एक बात कही जाए, पर उसका अर्थ बिल्कुल भिन्न या अप्रत्यक्ष निकलता हो, वहाँ **अन्योक्ति अलंकार** होता है। प्रस्तुत दोहे में अन्योक्ति का बहुत सुंदर और सटीक प्रयोग है।

2. 'अब दादुर बक्ता भए' में 'बक्ता' (वक्ता) शब्द में व्यंजना का सौंदर्य निहित है। 'बोलने लगे' या 'बोलते हैं' या 'बोल रहे हैं' की जगह 'बक्ता भए' का प्रयोग

किया गया है। आपने मंच पर लोगों को बोलते देखा होगा। किसी सभा या समाज में जो व्यक्ति मंच से अपनी बात कहे, उसे वक्ता कहते हैं। व्यंजना से अर्थ निकलता है कि अब मंच मूर्खों के ही हाथ में है।

टिप्पणी

दोहा-6

खैर, खून, खाँसी, खुसी,
वैर, प्रीति, मदपान।
रहिमन दाबे ना दबैं,
जानत सकल जहान।।

आइए, छठा दोहा ध्यान से पढ़ लेते हैं और इसे समझने का प्रयास करते हैं। इसमें सात चीज़ों या बातों का उल्लेख है। खैर यानी कत्था, खून, खाँसी, खुशी, वैर यानी दुश्मनी, प्रीति अर्थात् प्रेम और मद-पान यानी नशीली चीज़ का सेवन। रहीम कहते हैं कि ये सातों दबाने से नहीं दबते यानी उभर ही आते हैं। कहने का अर्थ है कि सारी दुनिया जानती है कि इन सातों को छिपाया नहीं जा सकता। ये सभी बातें समय आने पर प्रकट हो ही जाती हैं।

खैर यानी कत्था पान में प्रयोग किया जाता है और होठों को लाल करके अपनी उपस्थिति प्रकट कर देता है। ऐसे ही ख़ून भी अपने रंग को ऐसा छोड़ देता है कि उसे छिपाना संभव नहीं होता। ये तो आप जानते ही हैं कि खाँसी को भी दबाया नहीं जा सकता।

आपने ऐसे लोगों को तो देखा ही होगा जिनकी आपस में नहीं बनती और मौका पाते ही वे एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से नहीं चूकते। इसी को वैर कहते हैं। ऐसे लोग जब एक दूसरे के सामने आते हैं, तो उनका हाव-भाव और व्यवहार सभी के सामने उनके संबंधों को स्पष्ट कर देता है।

इसी तरह, किसी के प्रति प्रेम का भाव भी आँखों की चमक, बोलने के तरीके और व्यवहार से प्रकट हो जाता है।

आपने नशेड़ियों या शराबियों को देखा होगा। उन्हें देखते ही आपको पता लग जाता है कि इस आदमी ने ज़रूर शराब पी रखी है। उसकी चाल-ढाल, उसका बोलने का तरीका अपने आप शराब पीने की बात ज़ाहिर कर देता है।

इस तरह आपने देखा कि जिन सात बातों की चर्चा इस दोहे में की गई है, वे स्वयं ही अपने आपको व्यक्त कर देती हैं। उन्हें छिपाया नहीं जा सकता।

आपने दैनिक भाषा-व्यवहार में ध्यान दिया होगा कि किसी बात पर बल देने के लिए यह कहा जाता है—'अरे, भई! सारी दुनिया इस बात को जानती है' या 'हर कोई यह जानता है' या 'कौन इस बात को नहीं जानता' अथवा 'सभी जानते हैं' या 'सबको पता है जी' .....आदि-आदि। 'जानत सकल जहान' ऐसा ही प्रयोग है।

टिप्पणी

1. 'खैर, खून, खाँसी, खुसी' में 'ख' वर्ण का दुहराव है। अतः यहाँ **अनुप्रास अलंकार** है। आप जानते ही हैं कि जहाँ एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।